

बालभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – चतुर्थ

दिनांक -04 - 03 - 2021

विषय -हिन्दी

विषय शिक्षक -पंकज कुमार

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज विभक्ति के बारे में पुनः अध्ययन करेंगे ।

विभक्तियों की प्रयोगिक विशेषताएं :-

1. विभक्तियाँ स्वतंत्र होती हैं और इनका अस्तित्व भी स्वतंत्र होता है। क्योंकि एक काम शब्दों का संबंध दिखाना है इस वजह से इनका अर्थ नहीं होता।

जैसे :- ने , से आदि।

2. हिंदी की विभक्तियाँ विशेष रूप से सर्वनामों के साथ प्रयोग होकर विकार उत्पन्न करती हैं और उनसे मिल जाती हैं।

जैसे :- मेरा , हमारा , उसे , उन्हें आदि।

3. विभक्तियों को संज्ञा या सर्वनाम के साथ प्रयोग किया जाता है।

जैसे :- मोहन के घर से यह चीज आई है।

विभक्तियों का प्रयोग :-

हिंदी व्याकरण में विभक्तियों के प्रयोग की विधि निश्चित होती हैं। विभक्तियाँ दो तरह की होती हैं – विश्लिष्ट और संश्लिष्ट। जो विभक्तियाँ संज्ञाओं के साथ आती हैं उन्हें विश्लिष्ट विभक्ति कहते हैं। लेकिन जो विभक्तियाँ सर्वनामों के साथ मिलकर बनी होती है उसे संश्लिष्ट विभक्ति कहते हैं।

जैसे :- के लिए में दो विभक्तियाँ होती हैं इसमें पहला शब्द संश्लिष्ट होता है और दूसरा शब्द विश्लिष्ट होता है।

(1) कर्ता कारक :-

जो वाक्य में कार्य करता है उसे कर्ता कहा जाता है। अर्थात् वाक्य के जिस रूप से क्रिया को करने वाले का पता चले उसे कर्ता कहते हैं। कर्ता कारक की विभक्ति ने होती है। ने विभक्ति का प्रयोग भूतकाल की क्रिया में किया जाता है। कर्ता स्वतंत्र होता है। कर्ता कारक में ने विभक्ति का लोप भी होता है।

इस पद को संज्ञा या सर्वनाम माना जाता है। हम प्रश्नवाचक शब्दों के प्रयोग से भी कर्ता का पता लगा सकते हैं। संस्कृत का कर्ता ही हिंदी का कर्ताकारक होता है। कर्ता की ने विभक्ति का प्रयोग ज्यादातर पश्चिमी हिंदी में होता है। ने का प्रयोग केवल हिंदी और उर्दू में ही होता है।

जैसे :-

- (i) राम ने पत्र लिखा।
- (ii) हम कहाँ जा रहे हैं।
- (iii) रमेश ने आम खाया।
- (iv) सोहन किताब पढ़ता है।
- (v) राजेन्द्र ने पत्र लिखा।
- (vi) अध्यापक ने विद्यार्थियों को पढ़ाया।
- (vii) पुजारी जी पूजा कर रहे हैं।